● **द्वितीयः पाठः**

सदाचारः

(उत्तम आचरण)

सतां सज्जनानाम् आचारः सदाचारः। ये जनाः सद् एव विचारयन्ति, सद् एव आचरन्ति च, ते एव सज्जनाः भवन्ति। सज्जनाः यथा आचरन्ति तथैवाचरणं सदाचारः भवति। सदाचारेणैव सज्जनाः स्वकीयानि इन्द्रियाणि वशे कृत्वा सर्वैः सह शिष्टं व्यवहारं कुर्वन्ति।

विनयः हि मनुष्याणां भूषणम्। विनयशीलः जनः सर्वेषां जनानां प्रियः भवति। विनयः सदाचारात् उद्भवति। सदाचारात् न केवलं विनयः अपितु विविधाः अन्येऽपि सद्गुणाः विकसन्ति; यथा-धैर्यम्, दाक्षिण्यम्, संयमः, आत्मविश्वासः, निर्भीकता। अस्माकं भारतभूमेः प्रतिष्ठा जगति सदाचारादेव आसीत्। पृथिव्यां सर्वमानवाः स्वं स्वं चरित्रं भारतस्य सदाचार-परायणात् जनात् शिक्षेरन्। भारतभूमिः अनेकेषां सदाचारिणां पुरुषाणां जननी। एतेषां महापुरुषाणाम् आचारः अनुकरणीयः।

सदाचारः नाम नियमसंयमयोः पालनम्। इन्द्रियसंयमः सदाचारस्य मूले तिष्ठति। इन्द्रियसंयमः युक्ताहारविहारेण युक्तस्वप्नावबोधेन च सम्भवति। किं युक्तं किम् अयुक्तम् इति सदाचारेण निर्णेतुं शक्यते।

ये केऽपि पुरुषाः महान्तः अभवन् ते संयमेन सदाचारेणैव उन्नतिं गताः। यः जनः नियमेन अधीते, यथासमयं शेते, जागर्ति, खादति, पिबति च सः निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति। सदाचारस्य महिमा शास्त्रेषु अपि वर्णितः–

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः।
श्रद्धालुरनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति।।
आचाराल्लभते ह्यायुराचाराल्लभते श्रियम्।
आचाराल्लभते कीर्तिम् आचारः परमं धनम्।।

अतएव सदाचारः सर्वथा रक्षणीयः। महाभारते अपि सत्यम् एव उक्तं यत् अस्माभिः सदा चरित्रस्य रक्षा कार्या, धनं तु आयाति याति च, चरित्रं यदि नष्टं स्यात् तर्हि सर्वं विनष्टं भवति।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्, वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतोहतः।।

अभ्यास प्रश्न

• लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

१. सदाचारस्य कोऽर्थ:?

२. सज्जना: के भवन्ति?

३. मनुष्याणां भूषणं किमस्ति?

४. केषाम् आचार: अनुकरणीय:?

५. सर्वेषां जनानां प्रिय: क: भवति?

६. विनय: कस्मात् उद्भवति?

७. सदाचारात् के गुणा: विकसन्ति?

८. सदाचारस्य मूले क: तिष्ठति?

९. शतं वर्षाणि क: जीवति?

१०. जगति अस्माकं भारत भूमे: प्रतिष्ठा कस्मात् आसीत्?

११. क: जन: निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति?

१२. अस्माभि: कस्य रक्षा कार्या?

१३. महाभारते किम् उक्तम्?

• अनुवादात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित अंशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–**

(अ) सतां सज्जनानाम् .... व्यवहारं कुर्वन्ति।

(ब) विनय: हि मनुष्याणां .... आचार: अनुकरणीय:।

(स) सदाचार: नाम .... निर्णेतुं शक्यते।

(द) ये केऽपि पुरुषा: .... अपि वर्णित:।

(य) सर्वलक्षणहीनोऽपि .... परमं धनम्।

(र) अतएव सदाचार: .... विनष्टं भवति।

(ल) वृत्तं यत्नेन .... हतोहत:।

२. **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–**

(अ) सज्जनों का आचार ही सदाचार होता है।

(ब) संयम से लोग महान् हो जाते हैं।

(स) विनय सदाचार से उत्पन्न होता है।

(द) विनय मनुष्यों का आभूषण है।

(य) सदा चरित्र की रक्षा करनी चाहिए।

(र) विनयशील लोग सब लोगों के प्रिय होते हैं।

(ल) सज्जन सत् कहते हैं और सत् ही करते हैं।

● व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–**
तथैवाचरणम्, सज्जनः, अभ्युदयः, युक्ताहार, आचाराल्लभते।

२. **निम्नलिखित शब्द-रूपों में विभक्ति और वचन लिखिए–**
सज्जनाः, सर्वेषां, वशे, सदाचारात्, अस्माकं, भारतस्य।

३. **निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय लिखिए–**
अनुभवति, अनुकरणीयः, कृत्वा, सद्गुणाः।

● आन्तरिक मूल्यांकन

१. आपने कुछ सदाचारी महापुरुषों के बारे में पढ़ा होगा, उन महापुरुषों का नामोल्लेख करते हुए बताइए कि सबसे अधिक किस सदाचारी ने आपके मन को छुआ और क्यों?

२. सदाचार पर एक निबन्ध लिखिए।

शब्दार्थ

सद् = अच्छा। **ये** = जो। **तथैवाचरणम्** = तथा + एव + आचरणम् = वैसा ही व्यवहार। **आचरन्ति** = आचरण करते हैं। **सह** = साथ। **स्वकीयानि** = स्वयं की। **शिष्टं** = विनम्र। **सदाचारेणैव** = सदाचार से ही। **मनुष्याणां** = मनुष्यों का। **सदाचारात्** = सदाचार से। **दाक्षिण्यम्** = शिष्टाचार, शालीनता। **अन्येऽपि** = अन्य भी। **उद्भवति** = पैदा होता है। **नियमसंयमयोः** = नियम और संयम का। **युक्ताहार** = युक्त + आहार = अच्छा भोजन। **विहारेण** = विहार से। **युक्तस्वप्नावबोधेन** = सही समय पर सोना और जागना। **अयुक्तम्** = अनुचित। **अभ्युदयः** = उन्नति। **श्रद्धालुः** = श्रद्धा रखनेवाला। **अनसूयः** = दूसरों का दोष न देखनेवाला। **आचाराल्लभते** = आचार से प्राप्त करते हैं। **रक्षणीय** = रक्षा करते हैं। **उक्तम्** = कहा गया है। **आयाति** = आता है। **वृत्तं** = चरित्र। **वित्तम्** = धन। **हतो** = नष्ट हुआ।

●